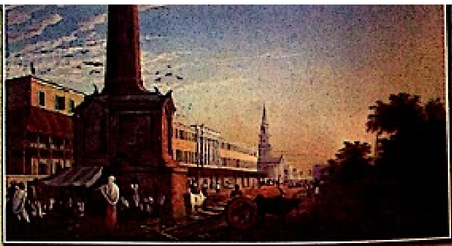

“सार्थक और सुन्दर के विकास के लिए ज्ञान की अपनी उन्मुक्तता और प्रभाव तथा सत्ता के गलियारों से उसके संबंध का सवाल अहमियत रखता है। इसलिए और भी कि ज्ञान की स्वाभाविक वृत्ति का संबंध जिज्ञासा से है और जिज्ञासा स्वयं में एक प्रगतिशील प्रवृत्ति है। यही वजह है कि इतिहास में सत्ता का वर्चस्ववाद और मानवता के लिए सार्थक तत्त्वों का विकास समानान्तर दिखाई देता है। यह पुस्तक जितना फोर्ट विलियम कॉलेज के विभिन्न पहलुओं, कंपनी की भाषा-नीति और हिन्दी-उर्दू संबंध को समेटने के लिए लिखी गई है उतना ही फोर्ट विलियम कॉलेज को एक माध्यम के रूप में केन्द्र में रखकर अठारहवीं-उन्नीसवीं सदी में सत्ता और ज्ञान के संबंधों की ऐसी ही बारीकियों को पहचानने के लिए भी। उन्नीसवीं सदी के इतिहास को लेकर 'उपनिवेशवाद' के आवरण में विभिन्न सरलीकृत निष्कर्ष निकाल लेना वाजिब नहीं, तब तो और भी जब विश्व-स्तर पर यह विराट परिवर्तनों का दौर था।

आवरण : शुऐब शाहिद

आलोचना | साहित्येतिहास

₹495

www.rajkamalprakashan.com

कम्पनी राज और हिन्दी

शीतांशु

कम्पनी राज और हिन्दी

संदर्भ : फोर्ट विलियम कॉलेज

शीतांशु

ISBN : 978-93-87462-69-4

मूल्य : ₹495

© शीतांशु

पहला संस्करण : 2018

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा.लि.
1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज
नई दिल्ली-110 002

शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006
पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद-211 001
36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017

वेबसाइट : www.rajkamalprakashan.com
ई-मेल : info@rajkamalprakashan.com

मुद्रक : बी.के. ऑफसेट
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

COMPANY RAJ AUR HINDI
Criticism by Sheetanshu

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनःप्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

अनुक्रम

सत्ता, ज्ञान और संस्थान 17

कम्पनी का व्यापारिक चरित्र और फोर्ट विलियम कॉलेज 49

कम्पनी और कॉलेज की भाषा-नीति का फर्क 79

हिन्दी-उर्दू एक बार फिर 128

हिन्दी साहित्य की परम्परा की चिन्ता 151

उपसंहार 170

परिशिष्ट 180

सन्दर्भ-ग्रन्थ 191

अनुक्रमणिका 198

पाठ और पाठ्यक्रम

संपादक
ओमप्रकाश सिंह
शीतांशु

पाठ और पाठ्यक्रम
संपादक ओमप्रकाश सिंह • शीतांशु

प्रकाशन संस्थान

4268-बी/3, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
फोन नं: 011-23253234,43549101,011-23287713
e-mail: prakashansansthan@gmail.com

ISBN 978-81-7714-501-4

प्रकाशक
प्रकाशन संस्थान
4268-B/3, अंसारी रोड, दरियागंज
नयी दिल्ली-110002

©: ओमप्रकाश सिंह

मूल्य : 500.00 रुपये
प्रथम संस्करण : सन् 2015
ISBN : 978-81-7714-501-4
आवरण : जगमोहन सिंह रावत

शब्द-संयोजन : मंतोष कुमार (09711963516)
मुद्रक : बी. के. ऑफसेट, दिल्ली-110032

अनुक्रम

पुनर्विचार की आवश्यकता क्यों *VII*

'पाठ और पाठ्यक्रम' के बारे में *XIII*

विरासत **43**

आचार्य रामचंद्र शुक्ल — कलकत्ता विश्वविद्यालय में हिन्दी की एम.ए. परीक्षा 45

पुस्तक पकी आँखें **47**

नामवर सिंह — साहित्य की पढ़ाई का मूल आधार है टेक्स्ट 49

अशोक वाजपेयी — मैं हिन्दी पाठ्यक्रम का शिकार नहीं रहा हूँ 56

आदिकाल और मध्यकाल **61**

तुलसीराम — साहित्य को लिजेण्ड से अलग करने की जरूरत है 63

गोपेश्वर सिंह — काशीसेंट्रिक दृष्टि से मुक्ति का प्रश्न 70

विभास वर्मा — जो सुन्दर है उसे सुरक्षित रखें 82

दीपशिखा सिंह — आदिकाल के पाठ्यक्रम का स्वरूप 88

आधुनिक काल **97**

रमेश गौतम — सामंजस्यपूर्ण और समावेशी पाठ्यक्रम की आवश्यकता 99

हरिमोहन शर्मा — पाठ्यक्रम बनाना ही नहीं, पाठ्यक्रम पढ़ाना भी होगा 104

स्मिता चतुर्वेदी — आधुनिक साहित्य के पाठ्यक्रम पर पुनर्विचार 112

समीक्षा ठाकुर — पाठ्यक्रम एक निरंतर प्रक्रिया है 119

ज्ञानेन्द्र कुमार सन्तोष — पाठ्यक्रम साधन है, साध्य नहीं 124

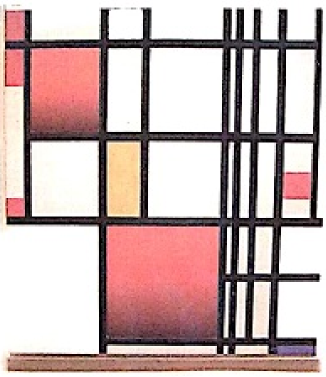

प्रकाशन संस्थान
4268-बी/3 अंसारी रोड दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
फोन नं: 011-23253234, 43549101, 011-23287713
e-mail : prakashansansthan@gmail.com
ISBN : 978-81-7714-607-3
मूल्य : 700.00 रुपये

उपन्यास का वर्तमान

सम्पादक
ओमप्रकाश सिंह
शीतांशु

उपन्यास का वर्तमान

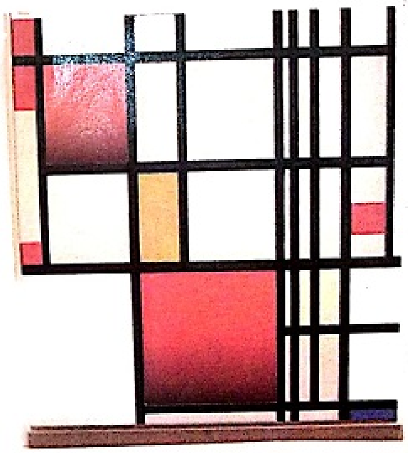

सम्पादक
ओमप्रकाश सिंह
शीतांशु

प्रकाशक
प्रकाशन संस्थान
4268-B/3, अंसारी रोड, दरियागंज
नयी दिल्ली-110002

© : सम्पादक

प्रथम संस्करण : सन् 2018
आवरण : शिवानन्द उपाध्याय

शब्द-संयोजन : पी. एस. कम्प्यूटर्स, नयी दिल्ली-110002
मुद्रक : बी. के. ऑफसेट, दिल्ली-110032

अनुक्रम

उपन्यास और हमारा समय *vii*
'उपन्यास का वर्तमान' के बारे में *xxvii*

विचार-खण्ड

कहीं हम लीक तो नहीं पीट रहे 41
–नामवर सिंह
परिवर्तन की आहटों को लक्षित करें 44
–केदारनाथ सिंह
देश-कालबद्ध मनुष्य की कथा 48
–मैनेजर पाण्डेय
उपन्यास की अपनी नैतिकता 53
–अशोक वाजपेयी
भारत का मूल प्रश्न क्या है 57
–गंगाप्रसाद विमल
वर्तमान का कोण साहित्यिक प्रक्रिया के केंद्र में होता है 68
–अजय तिवारी

आलोचना-खण्ड

1857 का मिथकभेदन बजरिये पाहीघर (पाहीघर–कमलाकांत त्रिपाठी) 77
–वीरेन्द्र यादव
विकास का सवाल और विस्थापन की व्यथा (डूब-वीरेन्द्र जैन) 83
–मनीष कुमार शुक्ल
हृदय और बुद्धि के बीच इतिहास और समाज (दिलोदानिश-कृष्णा सोबती) 95
–प्रदीप सक्सेना

प्रधान संपादक-प्रोफेसर (डॉ.) शेफाली रायजादा के बारे में

इतिहास तथा कानून दोनों ही विषयों में परास्नातक और उच्चतर शिक्षा(पी.एच.डी.) की धनी, पुस्तक की प्रधान संपादक प्रोफेसर (डॉ.) शेफाली रायजादा एमिटी लॉ स्कूल नोएडा की सह-निदेशक हैं। वे न्यायिक क्षेत्र में रसूख रखने वाले नामी खानदान से संबंध रखती हैं और अपनी उच्चतर शिक्षा उन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से अर्जित की है।

भारतीय कानून का इतिहास, अंतर्राष्ट्रीय संबंध, बौद्धिक संपदा अधिकार, मध्यस्थता और विवाद समाधान आदि में उन्हें महारथ हासिल है। वे राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में शिरकत करने के लिए देश-विदेश भ्रमण करती रहती हैं। उन्होनें कई संगोष्ठियों की अध्यक्षता भी की है। मध्यस्थता और विवाद समाधान संबन्धित संगोष्ठी में पढ़े गए पर्चे पर उन्हें सर्वोत्तम शोध पत्र और सर्वोत्तम प्रस्तुतीकरण का पुरस्कार भी मिल चुका है। वे मलेशिया विश्वविद्यालय की अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका के संपादक मण्डल में दो वर्षों तक रही हैं और एमिटी इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ लीगल एंड मल्टीडीसीप्लीनरी स्टडीज़ की प्रधान संपादक हैं। वे कई शोधपत्रों और पूर्वोत्तर पर एक पुस्तक की लेखिका हैं और उन्होंने स्नातक और परास्नातक की पाठ्य सामग्री भी तैयार की है। एमिटी विश्वविद्यालय की यूनिफ़ार्म कोर्स कोडिंग में वह महत्वपूर्ण भूमिका में रही हैं और सेंटर फॉर जेंडर स्टडीज की सक्रीय सदस्य हैं।

एमिटी लॉ स्कूल के अपने दस वर्षों से अधिक के कार्यकाल में उन्होंने लॉ स्कूल के विकास में सकारात्मक भूमिका निभाते हुए शिक्षा, शोध और क्षमता निर्माण के कई अवसर पैदा किए हैं।

संपादक-डॉ. तृप्ति श्रीवास्तव के बारे में

डॉ. तृप्ति जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली से हिन्दी अनुवाद में पीएचडी हैं और एमिटी लॉ स्कूल में सहायक प्रोफेसर के पद पर कार्यरत हैं। कानूनी हिन्दी, अनुवाद, विचारधारा और सिद्धान्त, धर्म, आधुनिकता, प्राच्यवाद और विमर्शवाद तथा दक्षिण-एशियाई अध्ययन में उनकी गहरी रूचि है। हाल ही में उन्होंने उत्तरउपनिवेशवाद पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का संयोजन किया है और भक्ति तथा प्राच्यवाद पर उनकी एक पुस्तक आगामी महीनों में प्रकाशित होने वाली है।

SATYAM LAW
INTERNATIONAL

9789382823872
Price : Rs. 425.00

प्रो.(डॉ.) शेफाली रायजादा न्याय की उत्तरऔपनिवेशिक भाषा और हिन्दी SATYAM LAW INTERNATIONAL

न्याय की उत्तरऔपनिवेशिक भाषा और हिन्दी

प्रधान संपादक
प्रो.(डॉ.) शेफाली रायजादा

संपादक
डॉ. तृप्ति श्रीवास्तव

सहसंपादक
श्रीमती एकता गुप्ता, श्री प्रेमपाल

SATYAM LAW
INTERNATIONAL

© 2018 Amity Law School, Noida

All rights reserved. No part of this book may be reproduced, stored in an information retrieval system, or transcribed, in any form or by any means – electronic, digital, mechanical, photocopying, recording, or otherwise – without the express written permission of the publisher, and the holder of copyright. Submit all inquiries and requests to the publisher: SATYAM LAW INTERNATIONAL, NEW DELHI, INDIA

ISBN : 978-93-82823-87-2

Published by : Satish Upadhyay, Satyam Law International

2/13, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-110 002, India

Phones : 0091-11-23242686, 23245698

Fax : 0091-11-23267131

Email : customercare@satyambooks.net

satyambooks@hotmail.com

Web : www.satyambooks.net

Printed in India : Sai Printo Pack Pvt. Ltd. New Delhi

अनुक्रमणिका

माननीया उर्मिला राजपूत (पूर्व विधायक) का संदेश V
माननीय बल्देव भाई शर्मा (अध्यक्ष, भारतीय पुस्तक न्यास) का संदेश VI
माननीय रमण प्रसाद सिन्हा (प्रवक्ता, जेएनयू) का संदेश VII
माननीय अशोक कु. चौहान (संस्थापक, आरबीईएफ) का आशीर्वाद VIII
माननीय दिलीप कुमार बंद्योपाध्याय (चेयरमैन, एमिटी लॉ स्कूल्स) का संदेश IX
माननीय डॉ. डी. एस. राठौर (परामर्शदाता-ए.आई.एस.एस.आर.) का संदेश X
प्रस्तावना- प्रो. (डॉ.) शेफाली रायजादा (प्रधान संपादक) XI
भूमिका - डॉ. तृप्ति श्रीवास्तव (संपादक) XIII
सह-संपादकीय- श्रीमती एकता गुप्ता XIX
सह-संपादकीय- श्री प्रेम पाल XX

अध्याय

1. न्याय की उत्तरऔपनिवेशिक अवधारणा और देशज भाषाएँ, ***गजाला रिजवी*** 1
2. भारतीय भाषिक परिप्रेक्ष्य, वंचित वर्ग और हिन्दी, ***प्रेमपाल*** 9
3. व्यवस्थात्मक अभिजात्य, न्यायिक मूकता और भाषायी अधिकार, ***जगदीश लाल*** 15
4. देश की न्याय व्यवस्था तीन प्रतिशत अंग्रेजीदां के लिए आरक्षित है! ***डॉ0 अमरनाथ*** 23
5. हिंदी कथा साहित्य के आईने में न्याय व्यवस्था का ग्रामीण वितान
डॉ0 मनीष कुमार शुक्ल 29
6. देशी कानून व्यवस्था के भाषायी अवशेष, ***डॉ0 वंदना सिंह*** 35
7. कंपनी राज में हिन्दी-उर्दू- बजरिए रामविलास शर्मा, ***शीतांशु*** 43
8. हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं की समस्याएं- अदालती कार्यवाहियों के
परिप्रेक्ष्य में, ***शाश्वत पाण्डेय*** 71
9. भारत में कानूनी हिन्दी के विकास, प्रयोग और सम्भावनाओं का अध्ययन
डॉ0 श्रुतिकान्त पाण्डेय 95
10. हिंदी भाषा की संवैधानिक स्थिति- सीमाएं एवं संभावनाए
कुमार शशांक, सक्षम शुक्ला 105
11. कानूनी हिन्दी- विवाद, विकास और सामयिक मुद्दे
नितिन पाण्डेय, अपूर्व अशीत 117
12. भारतीय संविधान, हिन्दी भाषा और नारी संरक्षण विधेयक कानून
डॉ0 राम कृष्ण राजपूत 127
13. आगामी दशकों में हिंदी: स्वरूप और संभावनाएँ, ***डॉ0 मंजु रुस्तगी*** 133
14. राष्ट्र का भाषायी आधार और हिन्दी, ***योगेश्वर प्रसाद थपलियाल*** 137

कंपनी राज में हिन्दी-उर्दू - बजरिए रामविलास शर्मा

शीतांशु
सहायक प्रवक्ता, असम विश्वविद्यालय, सिल्चर
ईमेल- sheetanshukumar@gmail.com

हिन्दी-उर्दू के मसले पर रामविलास शर्मा ने बहुत गहराई से विचार किया है। वास्तविकता यह है कि जिस समय की कहानी यह लेख कह रहा है उस समय के साहित्य का अगर सचमुच किसी ने वैज्ञानिक विश्लेषण करने का प्रयास किया है तो रामविलासजी ने। उनकी दो पुस्तकें इस दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण हैं- 'भाषा और समाज' तथा 'भारतेन्दु युग और हिन्दी भाषा की विकास परंपरा'। हिन्दी-उर्दू के बारे में जो हवाई बातें उड़ती रहती हैं उन्हीं के माध्यम से प्रारंभ में मेरी भी हिन्दी-उर्दू संबंधी दृष्टि निर्मित हुई थी। रामविलासजी की इन पुस्तकों के अध्ययन के बाद बहुत ही सहज रूप में मुझे अपनी दृष्टि की कमियाँ समझ में आ गईं। इसके पश्चात अपनी भाषा संस्था की पत्रिका 'भाषा-विमर्श' के नवम्बर 2014 के अंक में मैंने 'हिन्दी-उर्दू एक बार फिर' शीर्षक से एक आलेख लिखा और हिन्दी-उर्दू संबंधी बहस में कुछ और बिन्दु जोड़ने का प्रयास किया। प्रस्तुत आलेख एक तरह से उसी आलेख का दूसरा भाग है...बजरिए रामविलास शर्मा। इस आलेख को मैं उक्त आलेख का दूसरा भाग इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि इसमें रामविलासजी की उन कुछ एक बातों पर भी नज़र डाला गया है जो औपनिवेशक सत्ता और प्राच्य ज्ञान के संबंधों तथा हिन्दी-उर्दू के प्रश्न पर मुझे तर्कसम्मत नहीं जान पड़े।

उक्त पुस्तकों में रामविलासजी की मान्यताओं का सार यह है कि मुसलमानों के भारत आने और हिन्दुओं से उनके मिलन से उर्दू (फारसी

‘मैनेजर पाण्डेय एक पढ़े-लिखे, काफी समझदार और जिम्मेदार आलोचक हैं। वे जो कुछ भी कहते हैं उससे असहमत होने के काफी कारण हो सकते हैं लेकिन वे गैर-जिम्मेदारी से नहीं बोलते हैं। उनकी अपनी जो दृष्टि है उसके हिसाब से बोलते हैं। दूसरी बात यह है कि वे काफी पढ़े-लिखे आलोचक हैं। हिन्दी में ऐसे आलोचकों की संख्या बहुत है जो गैर-जिम्मेदार या कम पढ़े-लिखे हैं। आज की पीढ़ी के लोगों में पढ़ने-लिखने का शौक नहीं है, फ़तवे देने का शौक है। मैनेजर पाण्डेय में एक नैतिक बोध है। वे जैसा सार्वजनिक रूप से बोलते हैं वैसा ही लिखते हैं। तीसरी बात यह है कि मेरे हिसाब से उनमें हिन्दी साहित्य की परम्परा की गहरी समझ है। मसलन, सूरदास पर उन्होंने विस्तार से लिखा है। सूरदास की राजनीति, उनके किसान जीवन का वर्णन आदि की ओर कम से कम मेरा ध्यान तो मैनेजर पाण्डेय की किताब पढ़कर ही गया। चौथी बात, उन्होंने साहित्य से इतर भी काम किया है। मसलन, सखाराम गणेश देउस्कर पर उनकी सम्पादित किताब है। एक आलोचक को इससे जाँचा जाना चाहिए कि वह किसी ऐसे लेखक या कृति की ओर आपका ध्यान आकर्षित करे, जिस पर आपका ध्यान न गया हो।’

—अशोक वाजपेयी

E-book Available

ISBN : 978-93-5000-087-8

www.vaniprakashan.in

आलोचना / Criticism

वाणी प्रकाशन का लोगो मक़बूल फ़िदा हुसेन की कूची से
Vani Prakashan's signature motif is created by Artist Maqbool Fida Husain

वाणी प्रकाशन
परम्परा के 53 वर्ष

आलोचना और समाज
सम्पादक रविकान्त, आकांक्षा सिंह

वाणी प्रकाशन
परम्परा के 53 वर्ष

“मूल्य-विवेक से सम्पन्न आलोचक”—सत्यप्रकाश मिश्र

आलोचना और समाज

सम्पादक
रविकान्त
आकांक्षा सिंह

प्रतिबद्ध हूँ, सम्बद्ध हूँ, आबद्ध हूँ 138
श्रीधरम
आलोचना की संस्कृति और मैनेजर पाण्डेय की आलोचना 149
पंकज पराशर
मैनेजर पाण्डेय का उपन्यास-विमर्श 167
आनन्द पाण्डेय
आलोचना मुक्ति का अनुशासन है 179
कमलेश वर्मा
इतिहासबोध की समग्रता का प्रस्ताव 185
जीतेन्द्र गुप्ता
मैनेजर पाण्डेय की आलोचनाधर्मिता 194
अरविन्द अवस्थी
मध्यकाल : एक मार्क्सवादी नजरिया 201
राहुल सिंह
साहित्य का समाजशास्त्र और मैनेजर पाण्डेय की आलोचना-दृष्टि 208
शीतांशु
मैनेजर पाण्डेय की काव्यालोचना 247
चन्द्रेश्वर

साहित्य का समाजशास्त्र और मैनेजर पाण्डेय की आलोचना-दृष्टि

शीतांशु

'साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका' इस बार मैंने दो कारणों से पढ़ी है–एक, यह समझने के लिए कि प्रो. मैनेजर पाण्डेय की आलोचना जब मार्क्सवाद की आधार-भूमि पर पूरी मजबूती से खड़ी थी तब क्या सोचकर उन्होंने साहित्य के समाजशास्त्र पर यह पुस्तक लिखने का निर्णय लिया और दूसरा, क्या इस पुस्तक से भी उनकी आलोचना के मानदण्डों-उपकरणों को पहचानने में कुछ मदद मिल सकती है? इस आलेख में मूलतः इन्हीं दो सवालों पर विचार किया गया है। यह स्वीकार करने में मुझे कोई हिचक नहीं है कि इसके पहले मैंने इस पुस्तक को कभी विद्यार्थी जीवन के दौरान कोई अवधि-पत्र लिखने के लिए पलटा था, तो कभी साहित्य का समाजशास्त्र संक्षेप में किसी और को समझाने के लिए, कभी इसे जादुई यथार्थवाद के लिए पलटा था तो कभी प्रेमचन्द पर उन्होंने क्या लिखा है यह जानने के लिए। निःसन्देह मेरे प्रस्थान बिन्दु में हमेशा एक समस्या थी और मैं भी इस पुस्तक के बारे में प्रचलित सन्दर्भों और मान्यताओं का शिकार था। इसे मैंने ठीक वैसे ही छोड़ रखा था जैसे हिन्दी के ख्यातिलब्ध आलोचकों ने साहित्य के समाजशास्त्र को छोड़ रखा है।

ऐसा नहीं है कि इस पुस्तक को मैं महत्त्वपूर्ण नहीं मानता था, बस समस्या यह थी कि पाण्डेय जी की आलोचना को जानने-समझने के लिए मैं उनकी दूसरी पुस्तकों को ही देखता रह गया। ऐसे में, इस पुस्तक में की गयी बहसों, उसकी गम्भीरता और उसके वास्तविक महत्त्व की ओर कभी मेरी नजर ठीक से गयी ही नहीं। साहित्य के समाजशास्त्र के कई अनछुए पहलुओं के साथ-साथ यह पुस्तक रचना-प्रक्रिया, साहित्य की सामाजिकता, साहित्य की स्वायत्तता, बुद्धिधर्मी के दायित्व, रूप और अन्तर्वस्तु, मार्क्सवादी आलोचना, आलोचना की अन्य प्रचलित दृष्टियाँ, साहित्य-प्रक्रिया में पाठक की भागीदारी, यथार्थवाद, लोकप्रिय साहित्य, विभिन्न साहित्यिक रूपों की संरचना और ऐसे ही अन्य कई प्रश्नों से संवाद करने